ब्रह्मो समाज

संस्थापक -- राजा राममोहन राय
स्थापना -- 1828
स्थल -- कोलकाता

राजा राममोहन राय को 'आधुनिक भारत के निर्माता' के रूप में जाना जाता है। वे बचपन से ही होनहार थे। मात्र 15 साल की आयु में उन्होने संस्कृत, बंगाली, अरबी, फारसी भाषाओं पर अधिकार पा लिया था। देश - विदेश घूमकर उन्होने अपने ज्ञान भंडार को समृद्ध किया था। प्रारम्भ में उन्होने 'ईस्ट इंडिया कंपनी' मे नौकरी की लेकिन वे अधिक दिनों तक नौकरी नहीं कर पाए। जल्द ही नौकरी को त्यागकर अपने आप को राष्ट्र सेवा में समर्पित कर दिया। वे भारत में दोहरी लडाई लढ रहे थे। एक भारत को मुक्त कराने के लिए अंग्रेजों के खिलाफ और दूसरी समाज में फैली हुई कुरीतियों के खिलाफ। उस समय समाज में अनेक समस्याए थी जैसे सतीप्रथा, बालविवाह, विधवाओं की समस्याएं, जातिभेद, धार्मिक कर्मकांड, अंधविश्वास आदि। इन समस्याओं को दूर करने के लिए उन्होने काफी संघर्ष किया। 1828 में उन्होने ब्रह्मों समाज की स्थापना कोलकाता में की। ब्रह्मों समाज ने तीर्थयात्रा मूर्तिपूजा, कर्मकांड बालविवाह सतीप्रथा आदि विकृत रूढ़ियों की आलोचना की। इस संस्था का कार्य निम्नानुसार है :

संस्था का कार्य

सती प्रथा -- सती प्रथा भारतीय समुदाय में प्रचलित अत्यंत क्रूर प्रथा थी जिसमें किसी पुरुष के मृत्यु के बाद उसकी विधवा को उसके अंतिम संस्कार के दौरान चिता में जिंदा जला दिया जाता था। मरने वाली महिला को 'सती' कहा जाता था। यह प्रथा मानवता के नाम पर कलंक थी। इस अमानवीय प्रथा के कारण भारत कभी भी सभ्य और सुसंस्कृत नहीं हो सकता। अतः सबसे पहले राजा राममोहन राय ने इस सामाजिक प्रथा के खिलाफ अविरत आंदोलन चलाया। लोगों को सतीप्रथा के विरुद्ध जागरूक किया। 1828 में सती प्रथा के खिलाफ सरकार को अर्जी भेज दी। परिणाम स्वरूप गवर्नर जनरल लॉर्ड विलियम बैटिंक से प्रदीर्घ चर्चा करने के बाद 4 दिसंबर 1829 को सती बंदी का कानून घोषित किया।

बाल विवाह का विरोध -- वैदिक काल में वयस्क होने पर लड़के लड़कियों के विवाह होते थे परंतु स्मृति काल में लोग बाल विवाह के पक्ष में हो गए परिणाम यह हुआ कि लड़कियों के विवाह संस्कार ही उनके उपनयन संस्कार हो गए। बाल विवाह की स्थिति में लड़की का शारीरिक और मानसिक विकास संभव नहीं था। बहुत छोटी अवस्था में उसका विवाह हो जाता था। उसे सिखाया जाता था कि वह अपने पति की दासी है और उसी की सेवा करनी है, यही उसका धर्म है। इस दकियानूसी सोच के कारण महिलाओं का शोषण होता रहा । और वे चुपचाप सहती रही। बालविवाह के कारण उसके स्वास्थ्य पर भी बुरा असर पड़ता था। बहुत सी स्त्रियां असमय मृत्यु का शिकार हो जाती थी और उसका स्थान फिर से फिर से नयी लड़की लेती थी। इस प्रकार बालिकाओं के विवाह प्रायः प्रौढ़ व्यक्तियों से होते थे जिसे 'जरठ विवाह' कहा जाता है। फलतः स्त्रियों विधवा हो जाती थी। अतः राजा राम मोहन राय तथा उनके ब्रह्मों समाज ने बाल विवाह का विरोध किया और उसे कानूनी तौर पर बंद किया। उन्होने ब्रिटिश सरकार द्वारा एक बिल पास करवाया जिसे 'स्पेशल मैरिज एक्ट 1954' कहा जाता है । इसके अंतर्गत लड़के और लड़की के मध्य विवाह करने के नियम बनाए गए जिसके तहत विवाह के लिए एक निर्धारित उम्र तय की गई।

By Dr. Sangita Chitrakoti

विधवा विवाह को मान्यता -- विधवा विवाह की समस्या अन्य प्राचीन समस्याओं में से एक है। यह समस्या भारतीय समाज के लिए एक चुनौती बन गई थी। हिंदू समाज में समग्र नारी जीवन पुरुष दमन तथा शोषण से पीड़ित है। सामाजिक स्तर पर नकारात्मक दृष्टिकोण की वजह से विधवाओं को कई कठिनाइयों और अभावों का सामना करना पड़ता है। समाज द्वारा उन पर और उनके क्रियाकलापों पर कई प्रकार की पाबंदियां लगा दी जाती है। उसे केशवपन, आभूषण न पहनने , सफ़ेद या काले वस्त्र पहनने, व्रत रखने , शुभ कार्य से दूर रहने जैसे रूढ़ियों में बांधकर उसे अपनी समस्त आकांक्षाओं को समाज की बलिवेदी पर समर्पित करना पड़ता है। विधवाओं को पुनर्विवाह करने की भी अनुमति नहीं थी। नारी उत्थान के प्रबल समर्थक ईश्वरचन्द्र विद्यासागर ने धर्मग्रंथों द्वारा विधवा विवाह को शास्त्र सम्मत सिद्ध किया। उन्होने प्रश्न उठाया की यदि 'विधुर पुनर्विवाह कर सकता है तो विधवा क्यों नहीं?'
ब्रह्म समाज ने स्त्रियों को उनकी जिंदगी की खुशियां फिर से लौटाने के लिए विधवा विवाह को कानूनी स्थान देकर उसे सामाजिक गुलामगिरी से मुक्त किया।

नारी शिक्षा -- वैदिक काल में नारी शिक्षा का प्रचलन था। यह प्रचलन शायद अभिजात महिलाओं तक ही सीमित था परंतु बाद में स्त्रियों का कार्य क्षेत्र क्रमशः संकुचित हो गया केवल संतान उत्पत्ति और घर की चार दीवारों तक सीमित रह गया। युगों - युगों से नारी बंदिनी थी। राजा राम मोहन राय ने जाना की नारी को मुक्त करने का महत्वपूर्ण माध्यम शिक्षा है। यदि नारी अपने सारे बंधन तोड़ कर घर के बाहर अपने कदम रखकर शिक्षा प्राप्त करेगी तो वह खुद अत्याचार का सामना करेगी इसलिए स्त्री शिक्षा के पक्ष में ब्रह्मों समाज ने कई कार्य किए। ब्रह्मों समाज ने नारी शिक्षा पर अधिक जोर दिया। नारी शिक्षित हो जाने के कारण संपूर्ण परिवार सुसंस्कृत हो जाता है। इस दृष्टि से राजा राम मोहन राय ने 1817 में कोलकाता में 'हिन्दू कॉलेज' की स्थापना की। 1825 में उन्होने 'वेदान्त कॉलेज' की स्थापना की और नारी को शिक्षित होने के लिए प्रेरणा दी।

जातिभेद का विरोध -- जातिभेद एक सामाजिक कुरीति है। यह हमारे देश की विडंबना है। जाति प्रथा हमारी एकता में दरार पैदा करने का काम करती हैं। हरिजन मानव होते हुए भी मानवीय अधिकारों से वंचित थे। उनके लिए मंदिर प्रवेश वर्जित था, सार्वजनिक नदी कुएं पर पानी भरना मना था, उनकी छाया भी अशुभ मानी जाती थी। राजा राम मोहन राय ने इस भेद को मिटा कर समानता का आग्रह किया।

मूर्ति पूजा का विरोध -- इस युग में समाज में अस्थिरता थी। हिंदू धर्म के नाम पर कर्मकांड, बाह्य आडंबर, विकृत परंपरा का बोलबाला हो गया था। ठगबाजी से सामान्य जनता त्रस्त हो गयी थी। इसलिए जन सामान्य को शोषण से बचाने के लिए मूर्ति पूजा का उन्होंने घोर विरोध किया। 17 साल की उम्र में ही उन्होने मूर्ति पुजा के खिलाफ मोर्चा खोला था। ईश्वर एक है इस विचारधारा पर वे विश्वास करते थे। उन्होने मन और शक्ति को महत्व देते हुए मानव सेवा ही ईश्वर सेवा का संदेश दिया। भगवान का वास पत्थर की मूर्ति में नहीं होता बल्कि हर जीवित की सांस में होता है। कबीर के शब्दों में...

"मो को कहां ढूंढे बंदे
मैं तो तेरे पास में
ना मै देवल ना मै मस्जिद ना पावे कैलाश में
कहे कबीर सुनो भाई साधो
सब सांसों की सांस में। "

निष्कर्ष -- निष्कर्ष रूप में कहा जा सकता है कि राष्ट्रीय विकास में ब्रह्म समाज की भूमिका अत्यंत महत्वपूर्ण है। संस्था ने हिन्दू धर्म की कुरीतियो को दूर करते हुए बौद्धिक एवं तार्किक जीवन पर बल दिया। ब्रह्मों समाज के कारण अज्ञान में डूबे भारतीय समाज में नवप्रभात का आगमन हुआ।

By Dr. Sangita Chitrakoti